ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

इस अंक का मूल्य : 10 रुपये
वर्ष 47, अंक 15- एक प्रति, 5 रुपये
सोमवार 26 फरवरी, 2024 से रविवार 3 मार्च, 2024
विक्रमी सम्वत् 2080 सृष्टि सम्वत् 1960853124
दयानन्दाब्द : 200 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष : 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

19 वीं सदी के महामानव महर्षि दयानन्द सरस्वती 200वी जयंती पर कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से शत शत नमन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्मभूमि टंकारा, गुजरात की धरा पर तीन दिवसीय जन्मोत्सव-स्मरणोत्सव अविस्मरणीय स्मृतियों के साथ संपन्न

महर्षि की जन्मभूमि टंकारा की धरा पर 200वीं जयंती उद्घाटन के अवसर पर आयोजित आशीर्वाद सत्र में संन्यासी महानुभावों का आशीर्वाद प्राप्त करते और ईश्वर का आभार करते समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं और आर्य संगठनों के अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्यगण

महर्षि के 200वें जन्मोत्सव -स्मरणोत्सव में देश के कोने-कोने और विदेशों से उमड़ा जन सैलाब

स्मरणोत्सव की सम्पूर्ण रिपोर्ट और चित्रमय झांकी आगामी अंकों में भी प्रकाशित की जाएगी

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयंती पूरे देश के लिए एक ऐतिहासिक अवसर

(माननीय राष्ट्रपति जी का उद्बोधन)

मुख्य अतिथि
श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी
(माननीय राष्ट्रपति, भारत)

यह मेरा सौभाग्य है कि आज के दिन, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की जन्म-भूमि, टंकारा में आने का, मुझे अवसर मिला है। स्वामी जी की पावन स्मृति में सभी देशवासियों की ओर से मैं उन्हें सादर नमन करती हूं।

स्वामी जी की 200वीं जयंती पूरे देश के लिए एक ऐतिहासिक अवसर है। इस अत्यंत महत्वपूर्ण इस अवसर पर (जन्मोत्सव ज्ञान-ज्योति पर्व, स्मरणोत्सव समारोह) का आयोजन करने के लिए मैं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा तथा समस्त आर्य संगठनों की सराहना करती हूं।

देवियो और सज्जनो, हमारी भारत-भूमि धन्य रही है जिसने महर्षि दयानन्द सरस्वती जैसी अद्भुत विभूतियों को जन्म दिया है। महान आध्यात्मिक पथ-प्रदर्शक श्री अरविंदो ने महर्षि दयानन्द सरस्वती की महानता को व्यक्त करते हुए कहा था कि वे मनुष्यों और संस्थाओं के मूर्तिकार थे। मुझे बताया गया है कि आर्य समाज संस्था से जुड़े लगभग 10 हजार केंद्र आज मानवता के विकास और कल्याण के लिए कार्यरत हैं।

स्वामी जी के आदर्शों का गहरा प्रभाव लोकमान्य तिलक, लाला हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द और लाला लाजपत राय जैसे महापुरुषों पर पड़ा। स्वामी जी और उनके असाधारण अनुयायियों ने भारत के लोगों में नई चेतना और आत्म-विश्वास का संचार किया।

काठियावाड़की इस धरती ने भारत-माता के महानतम सपूतों को जन्म दिया है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के बाद की पीढ़ियों में इसी क्षेत्र में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जन्म हुआ। स्वामी जी ने समाज सुधार का बीड़ा उठाया और सत्य को सिद्ध करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश नामक अमर ग्रंथ की रचना की। महात्मा गांधी ने भारतीय राजनीति में जन-जन को शामिल करते हुए उसे आध्यात्मिक आधार दिया और 'सत्य के प्रयोग' नामक आत्मकथा की रचना की। ये दोनों ग्रंथ हमारे देशवासियों का ही नहीं बल्कि मानवता का मार्गदर्शन करते रहे हैं और करते रहेंगे। काठियावाड़ में जन्मे इन दोनों महापुरुषों के जीवन से सभी देशवासियों तथा पूरी मानवता को प्रेरणा मिलती रहेगी।

इन दोनों महान विभूतियों से जुड़े एक तथ्य का मैं उल्लेख करना चाहूंगी। अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वामी जी ने नमक कानून का विरोध किया था। उस ग्रंथ के प्रकाशन के लगभग 5 दशकों के बाद महात्मा गंधी ने नमक कानून का उल्लंघन किया और हमारे स्वाधीनता सग्राम में एक नई ऊर्जा का संचार किया। देश की सोई हुई आत्मा को जगाने, समाज को नैतिकता और समानता के आदर्शों से जोड़ने तथा देशवासियों में आत्म-गौरव का संचार करने में सौराष्ट्र की इस भूमि ने पूरे राष्ट्र को सही दिशा दिखाई है।

भारत के आधुनिक इतिहास का अध्ययन करने वाले यह जानते हैं कि आरंभ में स्वामी जी संस्कृत में ही अपनी बात कहते और लिखते थे। लेकिन उन्होंने यह सोचा कि उन्हें सामान्य लोगों से सीधा संपर्क बनाना चाहिए। इसलिए स्वामी जी ने समाज को सही दिशा दिखाने के लिए जन-भाषा हिन्दी का प्रयोग करना शुरु किया।

देवियो और सज्जनो, महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 19वीं सदी के भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुरीतियों को दूर करने का बीड़ा उठाया। उनके द्वारा फैलाए गए प्रकाश से रूढ़ियों और अज्ञान का अंधेरा दूर हुआ। वह प्रकाश तब से लेकर आज तक देशवासियों का मार्गदर्शन करता रहा है और भविष्य में भी करता रहेगा।

स्वामी जी ने समाज को आधुनिकता और सामाजिक न्याय का रास्ता दिखाया। उन्होंने बाल-विवाह और बहु-विवाह का कड़ा विरोध किया। उन्होंने विधवा-विवाह को प्रोत्साहित किया। वे नारी-शिक्षा और नारी-स्वाभिमान के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज द्वारा कन्या पाठशालाओं और छात्राओं के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों की स्थापना के द्वारा महिला सशक्तिकरण को अमूल्य योगदान दिया गया है। आज हमारी बेटियां विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों के नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। यह बदलाव, नारी स्वाभिमान के प्रति स्वामी जी के दृष्टिकोण के अनुरूप है।

महात्मा गांधी मानते थे कि छुआ-छूत को दूर करने के लिए स्वामी दयानन्द जी का अभियान, समाज सुधार का उनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य था। गांधीजी ने स्वयं भी स्वामी जी के उस अस्पृश्यता उन्मूलन अभियान को सर्वाधिक महत्व दिया।

स्वामी जी के समानता तथा समावेश के आदर्शों के अनुरूप, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ द्वारा जनजातीय आबादी वाले क्षेत्रों में विद्यालय चलाए जा रहे हैं। आदिवासी युवाओं के लिए कौशल विकास केंद्र चलाए जा रहे हैं। इन स्कूलों और केन्द्रों में छात्रों को निशुल्क आवास और शिक्षा प्रदान की जाती है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि आर्य समाज द्वारा स्वामी जी की 200वीं जयंती के दो वर्षो तक मनाए जाने वाले स्मरणोत्सव में बहुत ही महत्वपूर्ण मुददो पर केंद्रित किए जा रहे हैं, पारिवारिक और सामाजिक सौहार्द और प्राकृतिक कृषि तथा नशा मुक्ति से जुडे स्वामी जी के आदर्शों के अनरूप एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज के स्वर्णिम भविष्य के निर्माण में सहायक सिद्ध होंगे। गुजरात के वर्तमान राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी प्राकृतिक कृषि के क्षेत्र में अमूल्य मार्गदर्शन करते रहे हैं। स्वच्छ जल और अच्छी मिट्टी के बिना शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। प्राकृतिक कृषि को अपनाना कलाईमेट चेंज में भी सहायक सिद्ध होगा। आचार्य देवव्रत जी ने स्वामी दयानंद सरस्वती जी के विचारों और आदर्शों को पूरी निष्ठा से आगे बढाया है। इसके लिए मैं उनकी विशेष सराहना करती हूं। अगले वर्ष स्वामी जी द्वारा आर्य समाज की स्थापना के 150 वर्ष पूरे हो रहे हैं । मुझे पूरा विश्वास है कि आर्य समाज विश्व के सभी लोगों को श्रेष्ठ बनाने को कार्यरूप देने में निरंतर आगे बढते रहेंगे। मैं एक बार फिर महर्षि दयानंद जी को नमन करती हूं और आर्य समाज की विश्व व्यापी सफलता के लिए ईश्वर से कामना करती हूं।
जय हिंद, जय भारत

माननीय राष्ट्रपति, गुजरात के माननीय राज्यपाल और मुख्यमंत्री समापन समारोह के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हुए

चतुर्वेद परायण यज्ञ में आहुति देते हुए

ज्ञान ज्योति तीर्थ स्मारक का शिलान्यास करते हुए

महर्षि के जीवन पर आधारित प्रदर्शनी देखते हुए

श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी राष्ट्रपति जी को यज्ञ ज्योति भेंट देते हुए

श्री पूनम सूरी जी राष्ट्रपति जी को स्मृति चिन्ह भेंट देते हुए

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी राष्ट्रपति जी को वेद भेट देते हुए

200 वें जन्मोत्सव स्मरणोत्सव के शुभारंभ अवसर पर चतुर्वेदपरायण यज्ञ एवं ध्वजारोहण और विशाल शोभायात्रा के विहंगम दृश्य

आर्य समाज की युवाशक्ति आर्य वीर एवं वीरांगना दल द्वारा व्यायाम प्रदर्शन एवं कार्यक्रम स्थल से जुड़ी हुई विभिन्न व्यवस्थाओं के प्रेरक दृश्य

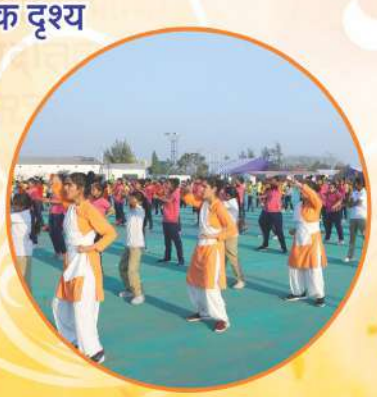

महर्षि की जन्मभूमि टंकारा में स्थित करसनजी के आंगन में देश विदेश के आर्य जनों के लिए अत्यंत आकर्षक एवं मनोहारी दृश्य तथा कार्यक्रम से जुड़ी प्रेरक प्रवृत्तियां

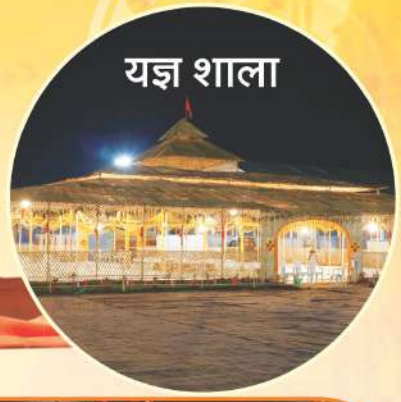

डी ए. वी. शिक्षण संस्थानों एवं गुरुकुलों के छात्र- छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रेरक झलकियां

इस अवसर पर विभिन्न पुस्तकों तथा महर्षि के जीवन पर आधारित फिल्म का विमोचन का दृश्य

साप्ताहिक आर्य सन्देश
सोमवार 26 फरवरी, 2024 से रविवार 3 मार्च, 2024
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, १५-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-११०००१

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPS, DRMS, दिल्ली -6 में पोस्ट करने का दिनांक 29/2-01-02/03/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 फरवरी, 2024

जन्मभूमि टंकारा में बनने वाले ज्ञान ज्योति तीर्थ स्मारक, प्रदर्शनी का अवलोकन, संन्यासियों का सम्मान करते हुए गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी पद्मश्री पूनम सूरी जी, श्री योगेश मुंजाल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री सुरेश चंद्र आर्य जी श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी एवं अन्य महानुभाव

संन्यासी वृंदों का सम्मान करते हुए श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी एवं श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स यूनिट नं. 21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावाली, दिल्ली -92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1ऋ फोन : 23360150ऋ 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ. ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह